Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-3501

द्वापर युग में पुनर्जन्म के प्रमाणःएक सत्य

श्री लाल सिंह[1], डॉ कविता पालावत[2]

[1]*सहायक आचार्य, राष्ट्रीय फैशन टेक्नोलॉजी संस्थान, रायबरेली, उत्तर प्रदेश, भारत-229010.*

[2]*सहायक आचार्य, महर्षि अरविंद विश्वविद्यालय।*

Correspondence E-mail Id: *editor@eurekajournals.com*

सारांश

जीवन और आत्मा के सफर के संबंध के विषय में हम बहुत कुछ नहीं जानते। रौज-मर्रा के काम-काजों की यात्रा एक बात है, जन्म से मृत्यु की यात्रा दूसरी बात है और एक जन्म से दूसरे जन्म की यात्रा,पहली दोनों यात्राओं से पूरी तरह अलग है। आम तौर पर यह सवाल हर व्यक्ति के मन में आता है की क्या हमारा सफर इसी जीवन तक सीमित है या उससे भी आगे है। इन्ही बातों को जानने के लिए यह एक प्रयास है। भारतीय इतिहास में ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते है जो इस बात की पुष्टि करते हैं की जीवन और आत्मा का सफर कभी भी रुकता नहीं है हालाँकि रुकने के भी प्रमाण है। रुकने का मतलब है मोक्ष, ओर मोक्ष की यात्रा छोटी भी है ओर लंबी भी है, परंतु हमारी सौध जीवन ओर आत्मा की यात्रा की है। इस सोध से एक व्यक्ति के जीवन में ओर एक समाज में क्या योगदान हो सकता है इसे जानने की खोज है। सही अर्थों में जीवन और आत्मा की यात्रा के महत्व को समझना, जीवन को ही समझना है।

मूलशब्दः समय, आत्मा, पुनर्जन्म, सत्य, प्रमाण।

प्रस्तावना

आत्मा की यात्रा बहुत सुखद यात्रा है परंतु जीवन की यात्रा बहुत ही दुःखद है। कहते है जिस चीज की सुरुवात होती है उसका अंत भी होता है, ओर मनुष्य के जीवन में उसके शरीर के बनने की यात्रा आरंभ होती है तो उसके शरीर का अंत होना भी निश्चित है, परंतु आत्मा तो

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

एक ऊर्जा है ओर आधुनिक विज्ञान के अनुसार ऊर्जा का कभी भी अंत नहीं होता, आत्मा वास्तव में एक ऊर्जा है और इसके प्रमाण को तो विज्ञान भी मानता है जिसका कभी भी अंत नहीं होता। जीवन सौ वर्षों के आस-पास का है जबकि आत्मा की यात्रा की कोई सीमा नहीं है। आत्मा की यात्रा एक वर्तुलाकार यात्रा है जो चलती ही रहती है। वास्तव में देखा जाए तो व्यक्ति एक साथ दो यात्राएं करता है, एक जो वर्तमान की यात्रा है जो उसे याद रहती है, परंतु जो हजारों साल की यात्रा है वह भूल जाता है। भूलने के बहुत से कारण है जो सही भी हैं और गलत भी हैं। हमे इसे इस तरह से समझना चाहिए की, मान लीजिये अगर किसी व्यक्ति को अपने सभी जन्मों की यात्राएँ याद आ जाएँ तो हो सकता है उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाए ओर यह भी हो सकता है की वह अपने पिछले जन्मों की यात्राओं से बहुत कुछ सीख ले ओर इस जन्म में सही निर्णयों के सहारे इस वर्तमान जीवन को सुखदाई बनाने में कामयाब हो सके। सही अर्थों में यह व्यक्ति की मानसिक क्षमता पर निर्भर करता है।

भारतीय संस्कृति और इतिहास में दो ऐसे महाकाव्य हैं जिनके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। रामायण तथा महाभारत ऐसे ही दो काव्य हैं, और इन्ही महाकाव्यों में से एक महाभारत के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे की क्या लौकिक ओर पालौकिक का मनुष्य के जीवन में कितना महत्व है। महाभारत में ऐसे बहुत से शाक्ष्य हैं जो इस बात की पुष्टि करते हैं की मनुष्य का एक जन्म नहीं बल्कि बहुत से जन्म होते हैं। इस महाकाव्य के अध्ययन से हमे मनुष्य की आत्मा की यात्रा एक जन्म की नहीं बल्कि कई जन्मों की यात्रा के विष्य में जानकारी मिलती है।

महाभारत के अध्ययन में शोधकर्ता को करीब एक वर्ष का समय लगा, और इसके अध्ययन के बाद यह बहुत ही विश्वास के साथ कहा जा सकता है की यह जीवन को पूरी तरह से समझने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये न सिर्फ मनुष्य के जीवन बल्कि समाज की सभी संभावनाओ को पूरी तरह से व्यक्त भी करतें हैं।

महाभारत का लेखन श्री वेदव्यास जी द्वारा किया गया है।

गीताप्रेसके इस महाभारतमें अनुष्टुप् छन्दके हिसाबसे तथा 'उवाच' जोड़कर कुल श्लोक-संख्या १००२१७ है। इसमें उत्तर भारतीय पाठकी ८६६००, दाक्षिणात्य पाठकी ६५८४ तथा 'उवाच' की ७०१३ है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

उद्देश्य

इस संसार में हर व्यक्ति परेशान है, और वह अपनी परेशानियों का हल खोजता ही रहता है, लेकिन सही अर्थों में क्या उसे अपनी परेशानियों का हल मिलता है। अगर मिलता भी है तो बहुत थोड़े समय के लिए ओर कुछ समय के बाद परेशानिया फिर खड़ी हो जाती हैं।

इस महाकाव्य के अध्ययन का उद्देश्य यह है की हम भारतीय इतिहास के इस महाकाव्य में ऐसे व्यक्तियों का पता लगाएँ जिन्हे अपने पिछले जन्मों का ज्ञान था, और उनके जीवन के अध्ययन से हम यह सीखे की मनुष्य के शरीर तथा आत्मा में बहुत क्षमता है जिसपर काम करने की आवश्यकता आज के युग में है। इस सोध में भगवद्गीता को नहीं लिया गया है हालाँकिवह भी महाभारता का ही हिस्सा है। इतिहासकार होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य है की हर व्यक्ति अपने एतिहासिक प्रश्नों के उत्तर खुद खोजे, जब तक वह अपने प्रश्नों के उत्तर नहीं खोजेगा तब तक वह सुख और शांति को प्राप्त नहीं होगा।

इस शोध का एक उद्देश्य हैं जिनका मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्व है जैसे :-

- ऐसे व्यक्तियों की खोज करना जिन्हे अपने पिछले जन्मों की जानकारी थी

परिकल्पना

भारतीय इतिहास के अधिकतर श्रोतों का अध्ययन सबसे ज्यादा जर्मनी में हो रहा है, जबकि इसका अध्ययन भारत में वैज्ञानिक तौर पर करने की जरूरत है। यह एक ऐसा विज्ञान और इतिहास है जो हजारों सालों पहले भारत में मौजूद था, लेकिन पश्चिमी संस्कृति के कारण इसकी ओर से ध्यान हटता चला गया। सभी विध्याओं में अध्यात्म विध्या श्रेष्ठ होती है क्यूंकी यह पूरी तरह से वैज्ञानिक होती है हालाँकि समय के साथ यह लुप्त हो चुकी है और इसी विज्ञान को वापस खोजने की जरूरत है। शोधकर्ता वास्तव में इस महाकाव्य के अध्ययन से लौकिक एवंम पालौकिक विज्ञान को समझने का प्रयास करता है। यह विज्ञान क्या किसी व्यक्ति के इस जन्म ओर पिछले जन्मों को जानने में मदद कर सकता है या नहीं, बस इसी की खोज है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

कार्य और कार्यप्रणाली की योजना

शोधकर्ता इस शोध में प्रयोगसिद्ध (Empirical) कार्यप्रणाली के माध्यम से महाकाव्य का अध्ययन तथा खोज करेगा। इस शोध का अध्ययन साहित्यों पर आधारित होगा, और इसके अलावा, दार्शनिक विचारों का अध्यन और पिछले जन्म के ऐतिहासिक श्रोतों के अध्ययनो का विश्लेषण होगा।

साहित्य की समीक्षा

- **महाभारत**

महाभारत के प्रत्येक अध्याय में से थोड़े से ही प्रमाण लिए गए हैं क्यूंकी इस काव्य में इतने सारे शाक्ष हैं की उन सब का इस सोध पत्र में एकत्रित कर पाना संभव नहीं है।

महाभारत आदिपर्व

पृष्ठ संख्या-47से हमें यह जानकारी मिलती है की -जन्म, मृत्यु तथा पुनर्जन्म होते हैं।

10 वां अध्याय-रूरु मुनि और डुंडुंभ का संवाद

पृष्ठ संख्या 99-डुंडुंभ ने कहा, रुरो-में पूर्वजन्म में सहस्रपाद नामक ऋषि था, किंतु एक ब्राह्मण के साप से मुझे इस सर्प योनि में आना पड़ा है।

168 वां अध्याय-व्यासजी का पांडवों को द्रोपदी के पुनर्जन्म का वृतांत सुनाना

पृष्ठ संख्या-562 से 563-तब वक्ताओं में श्रेष्ठ भगवान शिव ने उनसे कहा, भद्रे तुम्हारे पाँचभरतवंशी पति होंगे। उसके ऐसा कहने पर वह कन्या उन वरदायक देवता भगवान शिव से इस प्रकार बौली, देव प्रभु मैं आपकी कृपा से एक ही पति चाहती हूँ, तब भगवान ने पुनः उस से यह उत्तम बात कही, भद्रे, तुमने मुझसे पाँच बार कहा है कि मुझे पति दीजिए, अतः दूसरा शरीर धारण करने पर तुम्हें जैसा मैंने कहा है वह वरदान प्राप्त होगा, वही देवरूपनी कन्या राजा द्रुपद के कुल में उत्पन्न हुई।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

सभा पर्व

18 वां अध्याय-जरा राक्षसी का अपना परिचय देना और उसी के नाम पर बालक का नामकरण होना (जरासंध का नाम इसी जरा राक्षशी के नाम पर रखा गया था)

पृष्ठ संख्या-804 -मैं मनुष्यों के घर-घर में सदा मौजूद रहती हूँ, कहने को तो मैं राक्षसी हूँ, किंतु पूर्वकाल में ब्रह्मांजी ने ग्रहदेवी के नाम से मेरी सृष्टि की थी।

38 वां अध्याय-युधिष्ठिर का शिशुपाल को समझाना और भीष्मजी की उसके आक्षेपों का उत्तर देना

पृष्ठ संख्या-868-भीष्म जी द्वारा विष्णु के दस अवतारों की संक्षिप्त कथाओं का वर्णन किया गया है।

वन पर्व / विराटपर्व

40 वां अध्याय-भगवान शंकर का अर्जुन को वरदान देकर अपने धाम को प्रस्थान

पृष्ठ संख्या-1202 -देवदेव महादेव जी बोले, अर्जुन, तुम पूर्व शरीर में नर नामक सुप्रसिद्ध ऋषि थे, नारायण तुम्हारे सखा हैं, तुमने बद्रिकाश्रम में अनेक सहस्त्र वर्षों तक उग्र तपस्या की है।

84 वां अध्याय-नाना प्रकार के तीर्थों की महिमा

पृष्ठ संख्या-1349-उस तीर्थ में स्नान करने से पूर्वजन्म की बातों का स्मरण करने की शक्ति प्राप्त होती है, इसमें संशय नहीं है।

पृष्ठ संख्या-1351-कोका मुख तीर्थ में स्नान करके ब्रह्मचर्य एवं संयम-नियम का पालन करने वाला पुरुष पूर्व जन्म की बातों को स्मरण करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है। यह बात प्राचीन पुरुषों ने प्रत्यक्ष देखी है।

180 वां अध्याय-युधिष्ठिर का भीमसेन के पास पहुँचना और सर्परूपधारी नहुष के प्रश्नों का उत्तर देना

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

पृष्ठ संख्या-1620-निष्पाप नरेश, मैं पूर्व जन्म में तुम्हारा विख्यात पूर्वज नहुष नाम का राजा था, चंद्रमा से पाँचवी पीढ़ी में जो आयु नामक राजा हुए थे उन्हीं का में पुत्र हूँ

215 वां अध्याय-धर्म व्याध का कौशिक ब्राहमण कोमाता-पिता की सेवा का उपदेश देकर अपने पूर्वजन्म की कथा कहते हुए व्याध होने का कारण बताना

पृष्ठ संख्या-1755 -इस अध्याय में व्याध के पूर्व जन्म के बारे में जानकारी दी गई है।

उद्योग पर्व

36 वां अध्याय-दत्तात्रेय और साध्य देवताओं के संवाद का उल्लेख करके महाकुलीन लोगों का लक्षण बतलाते हुए विदुर का धृतराष्ट्र को समझाना

पृष्ठ संख्या-2405-मनुष्य बार-बार मरता और जन्म लेता है

41 वां अध्याय-विदुर जी के द्वारा स्मरण करने पर आए हुए सनत्सुजातऋषि से धृतराष्ट्र को उपदेश देने के लिए उनकी प्रार्थना

पृष्ठ संख्या -2425- विदुर जी ने कहा भरतवंशी धृतराष्ट्र, कुमार सनत्सुजात नामसे विख्यात जो (ब्रहमा जी के पुत्र) परम प्राचीन सनातन ऋषि हैं, उन्होंने एक बार कहा था मृत्यु है ही नहीं।

42 वां अध्याय-सनत्सुजातजी के द्वारा धृतराष्ट्र के विविध प्रश्नों का उत्तर

पृष्ठ संख्या-2428 से 2429-मनुष्य (क्रोध, प्रमाद और लोभ से) मोहित अहंकार के अधीन हो इस लोक से जाकर पुनः-पुनः जन्म-मरण के चक्कर में पढ़ते हैं, मरने के बाद उनके मन इंद्रिय और प्राण भी साथ जाते हैं। शरीर से प्राणरूपी इंद्रियों का वियोग होने के कारण मृत्यु (मरण) संज्ञा को प्राप्त होती है

96 वां अध्याय-परशुराम जी दम्भोद्भव की कथा द्वारा नर-नारायण स्वरूप अर्जुन और श्री कृष्ण के महत्व का वर्णन करना

पृष्ठ संख्या-2592- महाराज, अर्जुन में असंख्य गुण है एवं भगवान जनार्दन तो उनसे भी बढ़कर है, तुम भी कुंती पुत्र अर्जुन को अच्छी तरह जानते हो जो दोनों महात्मा नर और

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

नारायण के नाम से प्रसिद्ध हैं वे ही अर्जुन और श्री कृष्ण है, तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि वे दोनों पुरुषरत्न सर्वश्रेष्ठ वीर है।

146 वां अध्याय-अंबा की कठोर तपस्या

पृष्ठ संख्या-2810-राजन, राजकन्या अंबा उस तपस्या के प्रभाव से आधे शरीर से तो अंबा नाम की नदी हो गई और आधे अंग से वत्सदेश में ही एक कन्या होकर प्रकट हुई।

187 वां अध्याय-अंबा का दुत्तीय जन्म में पुनः तप करना और महादेव जी से अभीष्ट वर की प्राप्ति तथा उसका चिता की आग में प्रवेश

पृष्ठ संख्या-2811- तू रणक्षेत्र में भीष्म को अवश्य मारेगी और इसके लिए आवश्यकतानुसार पुरुषत्व भी प्राप्त कर लेगी। दूसरे शरीर में जाने पर तुझे इन सब बातों का स्मरण भी बना रहेगा, तू द्रुपद के कुल में उत्पन्न हो महारथी वीर होगी, तुझे शीघ्रता पूर्वक अस्त्र चलाने की कला में निपुणता प्राप्त होगी साथ ही तू विचित्र प्रकार से युद्ध करने वाली सम्मानित योद्धा होगी, कल्याणी मैंने जो कुछ कहा है वह सब पूरा होगा तू पहले तो कन्या रूप में ही उत्पन्न होगी फिर कुछ काल के पश्चात पुरुष हो जाएगी। ऐसा कहकर जटाजूटधारी वृषभध्वज महादेव जी उन सब ब्राह्मणों के देखते-देखते वहीं अंतर्ध्यान हो गए। तदन्तर उन महाऋषियों के देखते-देखते उस साध्वी एवं सुंदरी कन्या ने उस वन से बहुत सी लकड़ियों का संग्रह किया और एक विशाल चिता बनाकर उसमें आग लगा दी, महाराज जब आग प्रज्वलित हो गई, तब वह क्रोध से जलते हुए हृदय से भीष्म के वध का संकल्प बौलकर उस आग में प्रवेश कर गई। राजन, इस प्रकार काशिराज कि वह ज्येष्ठ पुत्री अंबा दूसरे जन्म में यमुना नदी के किनारे चिता की आग में जलकर भस्म हो गई।

192 वांअध्याय-शिखंडी को पुरुषत्व की प्राप्ति, द्रुपद और हिरण्यवर्मा की प्रसन्नता, स्थूणाकर्ण को कुबेर का शाप तथा भीष्म का शिखंडी को न मारने का निश्चय

पृष्ठ संख्या-2821-भरतश्रेष्ठ, काशीराज की ज्येष्ठ कन्या, जो अंबा नाम से विख्यात थी, वही द्रुपद के कुल में शिखंडी के रूप में उत्पन्न हुई है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

भीष्म पर्व, द्रोण पर्व व स्त्री पर्व

54 वां अध्याय-मृत्यु की घोर तपस्या ब्रह्मा जी के द्वारा उसे वर की प्राप्ति तथा नारद कंपन संवाद का उपसंहार

पृष्ठ संख्या-3648 से 3652-महान धनुर्धर अभिमन्यु पूर्व जन्म में चंद्रमा का पुत्र था, वह महारथी वीर समरांगण में समस्त धर्म के सामने पुत्रों का वध करके खड़क, शक्ति, गदा और धनुष द्वारा सम्मुख युद्ध करता हुआ मारा गया है तथा दुख रहित पुनः चंद्रलोक में ही चला गया है

26 वां अध्याय-प्राप्त अनुस्मृति विद्या और दिव्य दृष्टि के प्रभाव से युधिष्ठिर का महाभारत युद्ध में मारे गए लोगों की संख्या और गति का वर्णन तथा युधिष्ठिर की आज्ञा से सब का दाह संस्कार

पृष्ठ संख्या-4913-राजन इस युद्ध में एक अरब 66करोड़ 20,000 योद्धा मारे गए हैं राजेंद्र इसके अतिरिक्त 24,165 सैनिक लापता हैं।

शांति पर्व

28 वां अध्याय -अश्मा ऋषि और जनक के संवाद द्वारा प्रारब्ध की प्रबलता लाते हुए व्यास जी का युधिष्ठिर को समझाना

पृष्ठ संख्या-5008 -हमने संसार में अनेक बार जन्म ले कर सहस्रो माता पिता और सैकड़ों स्त्री-पुरुष के सुख का अनुभव किया है परंतु अब वह किसके हैं अथवा हम इनमें से किसके हैं

35 वां अध्याय-पाप कर्म के प्रांतों का वर्णन

पृष्ठ संख्या-5036-मनुष्य शुभ अशुभ जो भी कर्म करता है उसके पाँच महाभूत साक्षी होते हैं उन शुभ और अशुभ कर्मों का फल मृत्यु के पश्चात उसे प्राप्त होता है उन दोनों प्रकार के कर्मों में जो अधिक होता है उसी का कर्ता फल को प्राप्त होता है

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

73 वां अध्याय-विद्वान सदाचारी पुरोहित की आवश्यकता तथा ब्राह्मण और क्षत्रिय में मेल रहने से लाभ विषय राजा पुरुरवा का उपाख्यान

पृष्ठ संख्या-5151-कश्यप ने कहा राजकुमार इस लोक में ही ऐसी बात देखी जाती है परलोक में इस प्रकार का बर्ताव नहीं है जो पुण्य करता है वह और जो पाप करता है वह दोनों जब मृत्यु के पश्चात परलोक में जाते हैं तो वहाँ उन दोनों की स्थिति में बड़ा भारी अंतर हो जाता है।

202वां अध्याय-आत्म तत्व का और बुद्धि आदि प्राकृतिक पदार्थों का विवेचन तथा उनके साक्षात्कार का उपाय

पृष्ठ संख्या-5502-जैसे स्वप्न में मनुष्य अपने शरीर के कटे हुए अंग को अपने से अलग और पृथ्वी पर पड़ा देखता है, उसी प्रकार दस इंद्रियाँ पाँच प्राण तथा मन और बुद्धि इन 17 तत्वों के समुदाय का अभिमानी शुद्ध मन और बुद्धि वाला मनुष्य शरीर को अपने से प्रथक जाने। जो ऐसा नहीं जानता वही एक शरीर से दूसरे शरीर में जन्म लेता रहता है। आत्मा शरीर से सर्वथा भिन्न हैं वह इसके उत्पत्ति वृद्धि,क्षय और मृत्यु आदि दोषों से कभी लिप्त नहीं होता।किंतु अज्ञानी मनुष्य पूर्व कृत कर्मों के फल के संबंध से इस ऊपर बताए हुए शूक्ष्म शरीर के सहित दूसरे शरीर में चला जाता है। इसी तरह मनुष्य अपने दृश्य शरीर का त्याग करके जब दूसरे शरीर में प्रवेश करता है तब पहले के स्थूल शरीर को पंचमहाभूतों में मिलने के लिए छोड़कर दूसरे शरीर का आश्रय ले उसी को अपना स्वरूप मानकर धारण करता है। देहाभिमानी जीव जब शरीर छोड़ता है तब उस शरीर में जो आकाश का अंश होता है वह सब प्रकार से आकाश में, वायु का अंश वायु में, अग्नि का अग्नि में, जल का जल में तथा पृथ्वी का अंश पृथ्वी में विलीन हो जाता है। किंतु इन नाना भूतों के आश्रित जो श्रोत्रआदि तत्व हैं वे विलिन न होकर अपने-अपने कर्मों में प्रवृत्त रहते हैं और दूसरे शरीर में जाकर पाँचों भूतों का आश्रय ले लेते हैं।

आश्रम वासिक पर्व

31 वां अध्याय-व्यास जी के द्वारा धृतराष्ट्र आदि के पूर्व जन्म का परिचय तथा उनके रहने से सब लोगों का गंगा तट पर जाना

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

पृष्ठ संख्या-7155 -यह पूरा का पूरा अध्याय पूर्व जन्म पर आधारित है जिसे यहाँ शोध पत्र में लिखना मुमकिन नहीं है।

मौसल पर्व

8 वां अध्याय-अर्जुन और व्यास जी की बातचीत

पृष्ठ संख्या-7202-तुम्हारे देखते देखते स्त्रियों का जो अपहरण हुआ है उसमें भी देवताओं का एक रहस्य है, वे स्त्रियाँ पूर्व जन्म में अप्सराएँथीं उन्होंने अष्टावक्र मुनि के रूप का उपहास किया था, मुनि ने श्राप दिया था कि तुम लोग मानवी हो जाओ और दस्युओं के हाथ में पड़ने पर तुम्हारा इस श्राप से उद्धार होगा, इसलिए तुम्हारे बल काछ्य हुआ जिससे वे डाकुओं के हाथ में पडकर उस श्राप से छुटकारा पा जाएँ, अब वे अपना पूर्व रूप और स्थान पा चुकी हैं, अतः उनके लिए भी शौक करने की आवश्यकता नहीं है।

स्वर्गारोहण पर्व

चौथा अध्याय-युधिष्ठिर का दिव्य लोक में श्री कृष्ण, अर्जुन आदि का दर्शन करना

पृष्ठ संख्या -7228 -युधिष्ठिर,ये जो लोक कमनीय विग्रह से युक्त पवित्र गंधवाली देवी दिखाई दे रही है, साक्षात भगवती लक्ष्मी है, यही तुम्हारे लिए मनुष्य लोक में जाकर आयोनिशंभूता द्रोपदी के रूप में अवतीर्ण हुई थीं।

पृष्ठ संख्या-7228-स्वयं भगवान शंकर ने तुम लोगों की प्रसन्नता के लिए इन्हें प्रकट किया था और यही द्रुपद के कुल में जन्म धारण कर तुम सब भाइयों के द्वारा अनुग्रहित हुई थी

पृष्ठ संख्या-7228-राजन यह जो अग्नि के समान तेजस्वी और महान सौभाग्यशाली 5 गंधर्व दिखाई दे रहे हैं,ये ही तुम लोगों के वीर्य से उत्पन्न हुए द्रोपति के अनंत बलशाली पुत्र हुए थे।

5 वां अध्याय-भीष्मा आदि वीरो का अपने-अपने मूल स्वरूप में मिलना और महाभारत का उपसंहार तथा महात्म्य।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-3501

पृष्ठ संख्या-7232-जिस भगवान वेद व्यास ने इस पवित्र संहिता को प्रकट करके अपने पुत्र सुखदेव जी को पढ़ाया था,वे महात्मा महाभारत के सारभूत उपदेश का इस प्रकार वर्णन करते हैं, मनुष्य इस जगत में हजारों माता-पिताओं तथा सैकड़ों स्त्री-पुत्रों के संयोग वियोग का अनुभव कर चुके हैं, करते हैं और करते रहेंगे।

निष्कर्ष

मनुष्य का जीवन रहश्यमय है, व्यक्ति को लगता है की वह सब कुछ जानता है परन्तु ऐसा है नहीं, व्यक्ति को यह नहीं पता की वह आया कहाँ से है और मृत्यु के बाद वह कहाँ चला जायेगा। इस शोध से इतना तो आभाष हो ही जाता है की इस मानव शारीर में अद्भुत क्षमता है और वह चाहे तो अपने पिछले सभी जन्मों की जानकारी एकत्रित कर सकता है। महाकाव्य के अध्ययन से हम यह तो जान ही गए हैं की ऐसा पहले भी हो चुका है और यह संभव भी है। महाभारत के अध्ययन से यह बात सिद्ध होती है की इस जन्म के जो भी मानव कर्म हैं वे पिछले जन्मों के कर्मों की ही प्रतिक्रिया है। यह महाकाव्य न सिर्फ लौकिक बल्कि पार्लोकिक प्रमाणों के विष्य में भी जानकारी उपलब्ध करता है। हालाँकि इस पर अभी भी वेज्ञानिक तोर पर अध्ययन करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. https://nyktrivedi.wordpress.com

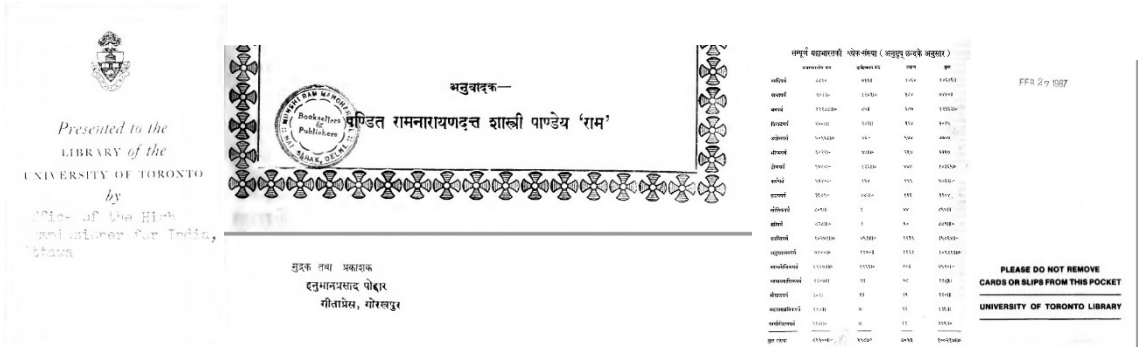

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.